अध्याय 53.
संहनन

1. **संहननामकर्म किसे कहते हैं ?**
   जिसके उदय से हड्डियों के बंधन में विशेषता आती है, उसे संहननामकर्म कहते हैं।
2. **संहनन के कितने भेद हैं ?**
   संहनन के छः भेद हैं। 1. वज्रर्षभनाराच संहनन, 2. वज्रनाराच संहनन, 3. नाराच संहनन, 4. अर्द्धनाराच संहनन, 5. कीलक संहनन, 6. असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन।
3. **वज्र, ऋषभ, नाराच और संहनन का क्या अर्थ है ?**
   वज्र - जो वज्र के समान अभेद्य अर्थात् जिसका भेदन न किया जाए उसे वज्र कहते हैं।
   ऋषभ - जिससे बाँधा जाए उसे ऋषभ (बेस्टन) कहते हैं।
   नाराच - नाराच नाम कील का है। जैसे-दरवाजे के कब्जों के बीच लोहे का कील होता है।
   संहनन - हड्डियों का समूह।
4. **संहननों की परिभाषा बताइए ?**
   1. **वज्रर्षभनाराच संहनन** - जिस शरीर में वज्र की हड्डियाँ हों, वज्र का ऋषभ हो और वज्र का नाराच हो, उसे वज्रर्षभनाराच संहनन कहते हैं।
   2. **वज्रनाराच संहनन**-जिसमें वज्र के बंधन न हों, सामान्य बंधन से बाँधा जाए किन्तु कील व हड्डियाँ वज्र की हों, उसे वज्रनाराच संहनन कहते हैं। जैसे-लोहे के सामान को सुतली से बांधना।
   3. **नाराच संहनन**- जिसमें वज्र विशेष से रहित साधारण नाराच से कीलित हड्डियों की संधि हो, उसे नाराच संहनन कहते हैं।
   4. **अर्द्धनाराच संहनन**- जिसमें हड्डियों की सन्धियाँ नाराच से आधी जुड़ी होती हैं, उसे अर्द्धनाराच संहनन कहते हैं।
   5. **कीलक संहनन**- जिसमें हड्डियाँ परस्पर में नोंक व गड्ढे के द्वारा फँसी हों, अर्थात् अलग से कील नहीं रहती, उसे कीलक संहनन कहते हैं।
   6. **असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन** - जिसमें अलग-अलग हड्डियाँ नसों से बंधी हों, परस्पर में कीलित न हों, उसे असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन कहते हैं। (जै. सि.को., 4/155)
5. **नरकगति, देवगति व एकेन्द्रिय जीवों में कौन-सा संहनन रहता है ?**
   नरकगति, देवगति व एकेन्द्रिय जीवों में किसी भी संहनन का उदय नहीं रहता है।
6. **तिर्यञ्चगति में कितने संहनन रहते हैं ?**
   तिर्यञ्चगति में छः संहनन रहते हैं।
7. **द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक के जीवों में कौन-सा संहनन रहता है ?**
   द्वीन्द्रिय से असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तक के जीवों में असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन रहता है।

8. भोगभूमि के मनुष्य एवं तिर्यञ्चों में कौन-सा संहनन रहता है ?

भोगभूमि के मनुष्य एवं तिर्यञ्चों में मात्र वज्रर्षभनाराच संहनन रहता है।

9. मनुष्यगति में कितने संहनन रहते हैं ?

मनुष्यगति में छः संहनन रहते हैं।

10. कर्मभूमि की महिलाओं में कितने संहनन रहते हैं ?

कर्मभूमि की महिलाओं में अंतिम तीन संहनन रहते हैं। (कर्मकाण्ड, गाथा 32)

11. कौन-सा संहनन कौन-से गुणस्थान तक रहता है ?

वज्रर्षभनाराच संहनन	–	1 से 13 गुणस्थान तक
वज्रनाराच और नाराच संहनन	–	1 से 11 गुणस्थान तक
अर्द्धनाराच,कीलक संहनन और असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन	–	1 से 7 गुणस्थान तक

12. कौन-से संहनन वाला मरणकर कौन-से स्वर्ग तक जाता है ?

असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन	–	8 वें स्वर्ग तक
कीलक संहनन	–	12 वें स्वर्ग तक
अर्द्धनाराच	–	16 वें स्वर्ग तक
नाराच संहनन	–	नवग्रैवेयक तक
वज्रनाराच	–	नवअनुदिश तक
वज्रर्षभनाराच संहनन	–	सर्वार्थसिद्धि एवं मोक्ष भी (कर्मकाण्ड, गाथा 30)

13. कौन-से संहनन वाला मरण कर कौन-सी पृथ्वी (नरक) तक जाता है ?

वज्रर्षभनाराच संहनन वाला	–	सातवीं पृथ्वी तक
वज्रनाराच संहनन से अर्द्धनाराचसंहनन वाला	–	छठवीं पृथ्वी तक
कीलक संहनन वाला	–	पाँचवीं पृथ्वी तक
असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन वाला	–	तीसरी पृथ्वी तक।

(कर्मकाण्ड, गाथा 31)

14. पञ्चम काल के मनुष्य व तिर्यञ्चों में कितने संहनन होते हैं ?

पञ्चम काल के मनुष्य व तिर्यञ्चों में अंतिम तीन संहनन होते हैं।

अभ्यास

सही या गलत बताइए-

1. जिससे बाँधा जाए उसे ऋषभ कहते हैं।
2. एकेन्द्रिय में असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन रहता है।
3. कर्मभूमि की महिलाओं में प्रारम्भ के 3 संहनन होते हैं।

अन्यत्र खोजिए -

1. कौन-कौन से संहनन का बंध कौन से गुणस्थान तक होता है ?
2. अढ़ाईद्वीप की महिलाओं में कितने संहनन होते हैं, नाम सहित बताइए ?